DR. MANOHAR KRISHNA DOLE

Dr. Manohar Krishna Dole is an exemplary personality who has dedicated his life to provide free eye care services to under-privileged and tribal communities in rural India.

2. Born on 22nd November, 1928, in a middle-class family in Pune, Dr. Dole graduated with a degree in Ayurvedic medicine from Pune University in 1953. At 31, he decided to move from the city to the underprivileged village of Narayangaon 80 km away in the hilly and inaccessible Junnar tehsil, to address the region's lack of healthcare facilities by setting up basic healthcare infrastructure. Although not an eye surgeon himself, he realized that blindness caused by cataract was the region's main problem and he set up the Mohan Thuse Eye Hospital and Research Institute there in 1982. The hospital organizes 40 free monthly eye-checkup camps in micro-interior areas of rural Maharashtra. Through these, it identifies and transports patients back in mobile eye care vans, provides all medical treatment including surgery, lens implants, Pre & postoperative checkups, and spectacles, gives food, accommodation, and counseling, and drops patients with restored vision back to their homes, all completely free of charge. The hospital has held over 25,000 free doorstep eye checkup camp in rural and inaccessible areas of Maharashtra. It has examined more than 1.5 crore patients in rural Maharashtra and have performed completely free eye surgeries to more than 1,75,000 tribals members of SC & ST communities and the under privileged people living in remote and inaccessible parts in five districts in Western Maharashtra.

3. As a recognition of Dr. Dole's efforts in the area, the Tata Institute of Social Sciences and the Rockefeller Foundation, USA, selected the project as one of 40 out of 6,000 institutes globally to develop research capabilities. In addition, the World Bank provided a grant of Rs. 14 lakhs. He also set up the rural region's first blood bank and eye bank. The hospital treats patients from primary health care centers in the region that do not perform cataract surgeries. A special focus is on treating female patients, because cataract is more prevalent among women The project was one of the first ones to be involved in the Central Government 'National Program for Control of Blindness' (NPCB) set up in 1976. Since 2000, it has been running a successful two-year fellowship program in cataract surgery training completed by over 250 fellows.

4. Dr. Dole's hospital was also a pioneering institute for eye transplants, and is home to the rural region's first blood bank and eye bank. The eye bank is part of a chain of 100 eye banks across the country run by Guruji Netrapedhi, Nagpur. Dr. Dole, after relevant field research & in a well-planned manner, established a system of Eye checkup camps (even in remote & not easily accessible areas). This proved of great benefit to common Indian citizens.

5. Dr. Dole has been bestowed with several honours and awards which includes for Social work in D Litt by National Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Shivneri; Bhushan Puraskar 2016. Felicitation by State Government of Maharashtra for most number of cataract surgeries in 2008, and Civilian Award in 2006 by Pune Municipal Corporation.

डॉ. मनोहर कृष्ण डोळे

डॉ. मनोहर कृष्ण डोळे एक विशिष्ट व्यक्ति हैं, जिन्होंने ग्रामीण भारत के वंचित और आदिवासी समुदायों को निःशुल्क नेत्र चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

2. 22 नवंबर, 1928 को पुणे के एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे, डॉ. डोळे ने 1953 में पुणे विश्वविद्यालय से आयुर्वेदिक चिकित्सा में डिग्री प्राप्त की। 31 वर्ष की आयु में, उन्होंने शहर से 80 किमी दूर पहाड़ी और दुर्गम जुन्नर तहसील के पिछड़े हुए नारायणगांव जाने का निश्चय किया ताकि बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं स्थापित करके इस क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधा की कमी को दूर कर सकें। यद्यपि वह नेत्र चिकित्सक नहीं थे, किंतु उन्होंने महसूस किया कि मोतियाबिंद के कारण दृष्टिहीनता इस क्षेत्र की मुख्य समस्या है इसलिए उन्होंने 1982 में मोहन थूसे नेत्र अस्पताल और अनुसंधान संस्थान की स्थापना की। यह अस्पताल ग्रामीण महाराष्ट्र के छोटे सुदूर क्षेत्रों में 40 निःशुल्क मासिक नेत्र जांच शिविर आयोजित करता है। इनके माध्यम से, यह रोगियों की पहचान करता है और उन्हें मोबाइल आई केयर वैन में लाकर, सर्जरी, लेंस इंप्लांट, शल्य चिकित्सा के पूर्व और पश्चात जांच और चश्मा, भोजन, विश्राम स्थल और परामर्श सहित सभी चिकित्सा उपचार प्रदान करता है, और आंख की नयी रोशनी के साथ रोगियों को वापस उनके घर पहुंचा देता है। ये सभी सुविधाएं निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। इस अस्पताल ने महाराष्ट्र के ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में नेत्र रोगियों की सुविधा हेतु उनके आस–पास ही 25,000 से अधिक निःशुल्क नेत्र जांच शिविरों का आयोजन किया है। इसने ग्रामीण महाराष्ट्र में 1.5 करोड़ से अधिक रोगियों की जांच की है और पश्चिमी महाराष्ट्र के पांच जिलों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के 1,75,000 से अधिक आदिवासियों और दुर्गम क्षेत्रों के सुविधाहीन लोगों की निःशुल्क सर्जरी की है।

3. इस क्षेत्र में डॉ. डोळे के प्रयासों के सम्मान के तौर पर, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज और रॉकफेलर फाउंडेशन, यूएसए द्वारा अनुसंधान क्षमताओं के विकास हेतु वैश्विक स्तर पर 6,000 संस्थानों में से चुनी गई 40 परियोजनाओं में उनकी परियोजना को भी शामिल किया। इसके अलावा, विश्व बैंक ने 14 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र का पहला ब्लड बैंक और आई बैंक भी स्थापित किया। यह अस्पताल इस क्षेत्र के उन प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों के रोगियों की चिकित्सा करता है, जहां मोतियाबिंद सर्जरी की सुविधा नहीं है। महिला रोगियों के इलाज पर विशेष ध्यान दिया जाता है, क्योंकि मोतियाबिंद महिलाओं में अधिक पाया जाता है। यह परियोजना 1976 में स्थापित केंद्र सरकार के 'राष्ट्रीय दृष्टिहीनता नियंत्रण कार्यक्रम' (एनपीसीबी) में शामिल होने वाली पहली परियोजनाओं में से एक थी। 2000 के बाद से, यह मोतियाबिंद सर्जरी प्रशिक्षण में दो वर्ष के एक फेलोशिप कार्यक्रम का सफल संचालन कर रहा है, जिसमें 250 से अधिक लोगों को प्रशिक्षण दिया गया है।

4. डॉ. डोळे का अस्पताल नेत्र प्रत्यारोपण का एक अग्रणी संस्थान भी है और इसके ग्रामीण क्षेत्र का पहला ब्लड बैंक और आई बैंक है। यह आई बैंक गुरुजी नेत्रपेधी, नागपुर द्वारा देश भर में संचालित 100 आई बैंकों की शृखला का हिस्सा है। डॉ. दोले ने प्रासंगिक क्षेत्र में अनुसंधान के पश्चात और सुनियोजित तरीके से नेत्र जांच शिविरों (यहां तक कि सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों में भी) की एक प्रणाली विकसित की। यह आम भारतीयों के लिए बहुत लाभकारी साबित हुआ है।

5. डॉ. डोळे को कई सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं, जिनमें राष्ट्रीय तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, शिवनेरी द्वारा 2014 में डी.लिट.; सामाजिक कार्य के लिए भूषण पुरस्कार 2016; सबसे अधिक संख्या में मोतियाबिंद सर्जरी करने के लिए महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा 2008 में सम्मान एवं पुणे नगर निगम द्वारा नागरिक पुरस्कार 2006 शामिल हैं।